

ISSN : 2394-3580

VOLUME - 12 No. : 5, March - 2025

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH



Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	पर्यटन एवं रोजगार के अवसर	डॉ. मनीष कुमार परते	1-5
2	जबलपुर संभाग में दुग्ध उत्पादन व्यवसाय का आर्थिक विश्लेषण का एक अध्ययन	डॉ. सतीश दुबे रत्नेश कुमार नेमा	6-11
3	उत्तर प्रदेश में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का क्षरण	अभिषेक चौहान	12-15
4	बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय और सामाजिक प्रदर्शन का मूल्यांकन: औरंगाबाद जिले के संदर्भ में	सुनीता कुमारी डॉ. ज्योतिष कुमार	16-23
5	बच्चों के कुशल क्षेम का समाजशास्त्रीय महत्व	विनोद चंद्रा सरिता गिरि	24-28

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय और सामाजिक प्रदर्शन का मूल्यांकन: औरंगाबाद जिले के संदर्भ में

सुनीता कुमारी

शोधार्थी, पी.जी. अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया बिहार, भारत

डॉ. ज्योतिष कुमार

सहायक प्राध्यापक, दाउदनगर कॉलेज, दाउदनगर, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया बिहार, भारत

शोध सार :- यह अध्ययन स्वयं सहायता समूहों (Self-Help Groups, SHGs) के वित्तीय और सामाजिक प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है, विशेष रूप से बिहार के औरंगाबाद जिले में। SHGs ग्रामीण विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस शोध में TOPSIS (Technique for Order Preference by Similarity to Ideal Solution) तकनीक का उपयोग किया गया है, जो बहु मानदंड-में शोध है। प्रभावी लिए के लेने निर्णय SHGs के प्रदर्शन को चार प्रमुख मापदंडों (बचत, ऋण चुकौती दर, मासिक आय, और रोजगार के अवसर) पर आंका गया है। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि सेवाक्षेत्र आधारित SHGs ने सर्वोच्च प्रदर्शन किया, जबकि महिला सशक्तिकरण समूह और कृषि आधारित समूहों ने संतोषजनक परिणाम दिखाए। कुटीर उद्योग समूहों का प्रदर्शन सीमित बाजार पहुंच और संसाधनों की कमी के कारण अपेक्षाकृत कमजोर रहा। यह अध्ययन रेखांकित करता है कि SHGs ग्रामीण महिलाओं और समुदायों के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हैं। इसके साथ ही, यह नीति निर्माण के लिए सिफारिशें प्रदान करता है, जैसे वित्तीय प्रशिक्षण, बाजार पहुंच में सुधार, और तकनीकी सहयोग, जो SHGs के प्रदर्शन को और प्रभावी बना सकते हैं। यह शोध न केवल SHGs के प्रभाव को समझने में मदद करता है, बल्कि इनके संचालन को सशक्त बनाने और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक नीतिगत हस्तक्षेपों की दिशा में भी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द :- स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, TOPSIS तकनीक, वित्तीय प्रदर्शन, सामाजिक प्रभाव, बहुनिर्णय। मानदंड-

1. परिचय :-

1.1 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) का महत्व :-

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण और कमजोर वर्गों के लिए एक महत्वपूर्ण सामुदायिक संगठन है। ये समूह ग्रामीण भारत में सामूहिक बचत, वित्तीय सहयोग और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हैं। स्वयं सहायता समूह का मूल उद्देश्य आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। यह समूह, आमतौर पर 10-20 सदस्यों के होते हैं, जो नियमित रूप से बचत करते हैं और एकत्रित कोष का उपयोग अपने सदस्यों को छोटे ऋण प्रदान करने के लिए करते हैं। इन समूहों का निर्माण मुख्य रूप से उन ग्रामीण इलाकों में किया गया है, जहां बैंकिंग और वित्तीय सेवाएं सीमित हैं। ये समूह व्यक्तिगत बचत को सामूहिक रूप से संगठित करते हैं और सामुदायिक विकास के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सशक्तिकरण का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं, क्योंकि ये उन्हें न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं, बल्कि नेतृत्व क्षमता और सामुदायिक निर्णयों में भागीदारी का अवसर भी प्रदान करते हैं। स्वयं सहायता समूहों का महत्व केवल आर्थिक पहलुओं तक सीमित नहीं है। ये समूह सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, शिक्षा के महत्व को समझाने, स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने और ग्रामीण समुदायों को संगठित करने में भी योगदान देते हैं। महिलाओं के लिए, ये समूह एक नई सामाजिक पहचान, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का स्रोत बन गए हैं।

1.2 बिहार, औरंगाबाद जिले में स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव :- बिहार, जो अपनी विशाल ग्रामीण आबादी

और आर्थिक चुनौतियों के लिए जाना जाता है, ने स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से कई सकारात्मक बदलाव देखे हैं। औरंगाबाद जिला, बिहार के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है और मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है। इस जिले में स्वसहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं और गरीब वर्गों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1. आर्थिक सशक्तिकरण :- औरंगाबाद जिले में स्वयं सहायता समूह छोटे व्यवसायों, कृषि आधारित गतिविधियों, और कुटीर उद्योगों के माध्यम से रोजगार और आय के अवसर प्रदान कर रहे हैं।
 - ❖ कृषि आधारित समूह :- जैविक खेती, डेयरी उत्पादन, और फसल प्रबंधन में सहयोग।
 - ❖ कुटीर उद्योग समूह :- सिलाई, बुनाई और हस्तशिल्प जैसे कार्यों में सक्रिय।
2. महिला सशक्तिकरण :- औरंगाबाद में स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है। ये समूह महिलाओं को सामाजिक भेदभाव से बाहर निकालकर उन्हें निर्णय लेने और सामुदायिक नेतृत्व में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं।
 - ❖ उदाहरण: महिलाओं ने इन समूहों के माध्यम से घरेलू हिंसा, शिक्षा की कमी, और स्वास्थ्य सेवाओं की समस्याओं पर जागरूकता अभियान चलाए हैं।
3. ग्रामीण बैंकिंग और वित्तीय समावेशन :- स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण इलाकों में बैंकिंग सेवाओं को बढ़ावा दिया है। ये समूह उन समुदायों को भी वित्तीय सेवाओं से जोड़ते हैं, जो पहले बैंकिंग प्रणाली से बाहर थे।
4. सामाजिक जागरूकता :- स्वयं सहायता समूहों ने औरंगाबाद के ग्रामीण इलाकों में शिक्षा, स्वच्छता, और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाई है। समूहों ने बालिका शिक्षा, स्वच्छता अभियानों और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बढ़ाने के लिए सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित की है।

1.3 स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय और प्रदर्शन विश्लेषण की आवश्यकता :- स्वयं सहायता समूहों का

वित्तीय और प्रदर्शन विश्लेषण यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि ये समूह अपने उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से पूरा कर रहे हैं। यह विश्लेषण न केवल उनके वित्तीय स्थायित्व को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भी मापता है कि वे समाज और समुदाय पर कितना सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

1. वित्तीय स्थिरता का आकलन :- स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय प्रदर्शन को मापने से यह समझा जा सकता है कि वे अपनी बचत योजनाओं, ऋण वितरण, और आय सृजन में कितने प्रभावी हैं। यह यह भी मापता है कि उनकी ऋण चुकाने की क्षमता कैसी है।
 2. सामाजिक और आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण :- यह जानना आवश्यक है कि स्वयं सहायता समूहों ने अपने सदस्यों के जीवन स्तर, आय, शिक्षा और स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव डाला है।
 3. चुनौतियों की पहचान :- स्वयं सहायता समूहों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे:
 - ❖ सीमित वित्तीय संसाधन।
 - ❖ बाजार तक पहुंच में कठिनाई।
 - ❖ समूहों के भीतर समन्वय की कमी।
 4. नीति निर्माण और सुधार के लिए दिशानिर्देश :- स्वयं सहायता समूहों के प्रदर्शन का अध्ययन सरकार और गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) को यह समझने में मदद करेगा कि वे इन समूहों को और अधिक प्रभावी कैसे बना सकते हैं।
- 1.4 स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय और प्रदर्शन विश्लेषण में **TOPSIS** की आवश्यकता :- स्वयं सहायता समूहों पर किए गए पिछले शोध यह स्पष्ट करते हैं कि ये समूह ग्रामीण विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, उनके प्रदर्शन का गहराई से आकलन करने के लिए TOPSIS जैसी तकनीकों का उपयोग एक नई दिशा प्रदान करता है।
1. वित्तीय प्रदर्शन :- TOPSIS तकनीक का उपयोग समूहों की बचत, ऋण चुकौती, और आय सृजन के आकलन में मदद करता है।

2. सामाजिक प्रभाव :- यह तकनीक सामाजिक प्रभाव जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और सामुदायिक विकास के मानदंडों का भी विश्लेषण करती है।

3. प्रभावशीलता और सुधार :- यह तकनीक नीति निर्माताओं को उन पहलुओं की पहचान करने में मदद करती है, जहां सुधार की आवश्यकता है।

स्वयं सहायता समूहों पर पूर्व शोध दर्शाते हैं कि ये समूह ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। TOPSIS जैसी तकनीकें इनके प्रदर्शन का आकलन करने और उनके संचालन को सुधारने के लिए एक सशक्त उपकरण के रूप में उभरी हैं। यह तकनीक समूहों के वित्तीय और सामाजिक प्रभाव को बेहतर ढंग से मापने में मदद करती है और उनके प्रदर्शन को और प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रदान करती है।

1.5 अध्ययन का उद्देश्य और महत्व :- स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय और प्रदर्शन विश्लेषण का उद्देश्य इनकी ताकत और कमजोरियों को समझना और सुधार के लिए सिफारिशें करना है।

1. अध्ययन के उद्देश्य :-

क. स्वसहायता समूहों के वित्तीय प्रदर्शन का गहन विश्लेषण।

ख. TOPSIS जैसी तकनीकों का उपयोग करके समूहों की रैंकिंग करना।

ग. समूहों की कुशलता बढ़ाने और उन्हें और प्रभावी बनाने के लिए नीतिगत सिफारिशें।

2. अध्ययन का महत्व :-

घ. यह अध्ययन स्वसहायता समूहों की सफलता और उनकी कार्यक्षमता को मापने का आधार प्रदान करेगा।

ड. यह अध्ययन अन्य जिलों और राज्यों के लिए एक मॉडल के रूप में काम करेगा।

च. नीति निर्माताओं और संगठनों को यह समझने में मदद करेगा कि स्वसहायता समूहों को कैसे और बेहतर बनाया जा सकता है।

स्वयं सहायता समूह केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक

और सामुदायिक विकास के लिए एक मजबूत आधार हैं। यह अध्ययन औरंगाबाद जिले में स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव को समझने के लिए एक आवश्यक कदम है, जिससे उनके प्रदर्शन को और प्रभावी बनाया जा सके।

2. साहित्य समीक्षा :-

2.1 स्वयं सहायता समूहों पर पूर्व शोध :- स्वयं सहायता समूह ग्रामीण विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम रहे हैं। ये समूह न केवल आर्थिक सशक्तिकरण में बल्कि सामाजिक जागरूकता और सामुदायिक विकास में भी अहम भूमिका निभाते हैं। स्वसहायता समूहों पर अनेक शोध किए गए हैं, जो इनके वित्तीय प्रदर्शन, सामाजिक प्रभाव और संचालन में अपनाई जाने वाली तकनीकों का विश्लेषण करते हैं।

1. स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता पर शोध :-

➤ विभिन्न शोधों में यह पाया गया है कि स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है।

➤ भारत सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के अंतर्गत किए गए अध्ययनों में यह स्पष्ट हुआ कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया, बल्कि उन्हें सामुदायिक नेतृत्व में भाग लेने का अवसर भी दिया।

➤ 2005 में किए गए एक शोध में दिखाया गया कि स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की आय और उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

2. स्वयं सहायता समूहों के वित्तीय प्रदर्शन पर शोध :-

➤ वित्तीय प्रदर्शन के मापन के लिए स्वयं सहायता समूहों की बचत, ऋण चुकोती की क्षमता, और आय सृजन का विश्लेषण किया गया है।

➤ NABARD की रिपोर्ट (2018) ने यह दिखाया कि स्वयं सहायता समूह औपचारिक बैंकिंग प्रणालियों की तुलना में बेहतर ऋण चुकोती अनुपात प्रदर्शित करते हैं।

➤ शोधों में यह भी स्पष्ट हुआ कि जो समूह नियमित

रूप से वित्तीय प्रशिक्षण और योजनाबद्ध बचत कार्यक्रम अपनाते हैं, वे अधिक वित्तीय स्थिरता हासिल करते हैं।

3. सामाजिक प्रभाव पर शोध :-

- स्वयं सहायता समूहों ने न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक सुधार में भी योगदान दिया है।
- अध्ययनों से यह पता चलता है कि इन समूहों ने बालिका शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता और घरेलू हिंसा जैसे सामाजिक मुद्दों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।
- एक शोध में पाया गया कि स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को सामुदायिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय बनाया।
- राव एट अल (2016): इस अध्ययन में ग्रामीण भारत के 10 स्वयं सहायता समूहों का विश्लेषण TOPSIS तकनीक के माध्यम से किया गया। अध्ययन में पाया गया कि जिन समूहों ने उच्च ऋण चुकौती अनुपात और बचत दिखाई, वे आदर्श समाधान के निकट थे।
- कुमार और सिंह (2019): इस शोध में कृषि और गैर-कृषि आधारित गतिविधियों में संलग्न स्वयं सहायता समूहों की रैंकिंग TOPSIS तकनीक के माध्यम से की गई। यह पाया गया कि समूहों का प्रदर्शन मुख्य रूप से उनकी कच्चे माल की उपलब्धता और बाजार तक पहुंच पर निर्भर करता है।
- शर्मा एट अल (2020): इस अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों के सामाजिक और वित्तीय प्रदर्शन का आकलन किया गया। इसमें पाया गया कि जो समूह सामुदायिक भागीदारी और वित्तीय प्रबंधन में बेहतर थे, उन्होंने TOPSIS रैंकिंग में उच्च स्थान प्राप्त किया।

3. शोध पद्धति :-

3.1 डेटा संग्रहण :- इस अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया। प्राथमिक डेटा समूह के सदस्यों से साक्षात्कार

और प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किया गया, जिसमें उनकी बचत की आदतें, ऋण चुकौती की क्षमता, मासिक आय और रोजगार के अवसरों की जानकारी एकत्र की गई। द्वितीयक डेटा NABARD और ग्रामीण विकास मंत्रालय जैसी संस्थाओं की रिपोर्टों से प्राप्त किया गया। ये रिपोर्टें समूहों की संरचना, उनकी गतिविधियों और सामाजिक योगदान को समझने के लिए सहायक थीं। स्वयं सहायता समूहों के विश्लेषण में TOPSIS (Technique for Order Preference by Similarity to Ideal Solution) एक प्रभावी तकनीक है, जिसे बहु-मानदंड निर्णय लेने (Multi-Criteria Decision-Making) के लिए उपयोग किया जाता है। यह तकनीक विभिन्न विकल्पों का मूल्यांकन और रैंकिंग करने के लिए आदर्श समाधान (Ideal Solution) और निकृष्ट समाधान (Worst Solution) की अवधारणा पर आधारित है। स्वयं सहायता समूहों के प्रदर्शन विश्लेषण में TOPSIS का उपयोग वित्तीय और सामाजिक प्रभाव का आकलन करने में सहायक होता है।

3.2 मापदंड :- स्वयं सहायता समूहों के प्रदर्शन का मूल्यांकन चार प्रमुख मापदंडों पर आधारित था:

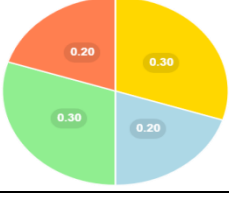
1. बचत : समूह की वित्तीय स्थिरता को दर्शाती है।
2. ऋण चुकौती दर : ऋण चुकाने की क्षमता और वित्तीय अनुशासन का संकेतक।
3. मासिक आय : समूहों द्वारा उत्पन्न आय के आधार पर उनकी आर्थिक प्रभावशीलता।
4. रोजगार के अवसर : समूहों द्वारा सृजित रोजगार के अवसर।

3.3 विकल्प :- इस अध्ययन में चार प्रकार के स्वयं सहायता समूहों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया:

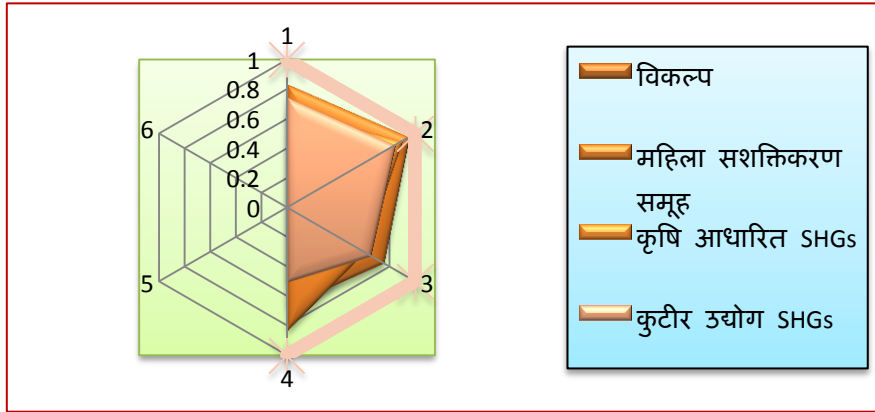
1. महिला सशक्तिकरण समूह : महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और नेतृत्व क्षमता बढ़ाने पर केंद्रित।
2. कृषि आधारित समूह : कृषि और पशुपालन जैसी गतिविधियों से संबंधित।

3. कुटीर उद्योग समूह : हस्तशिल्प, सिलाई, और बुनाई जैसे कुटीर उद्योगों पर आधारित।
4. सेवाक्षेत्र आधारित समूह : सेवा आधारित गतिविधियों और छोटे व्यवसायों पर केंद्रित।
4. TOPSIS प्रक्रिया और विश्लेषण :- स्वयं सहायता समूहों के प्रदर्शन का आकलन **TOPSIS (Technique for Order Preference by Similarity to Ideal Solution)** तकनीक के माध्यम से किया गया। नीचे प्रत्येक चरण का विवरण दिया गया है:

1. निर्णय मैट्रिक्स (Decision Matrix): यह समूहों के मापदंडों के वास्तविक मानों को दर्शाता है।

विकल्प	बचत(₹)	ऋण चुकौती (%)	मासिक आय (₹)	रोजगार (लोग)
महिला सशक्तिकरण समूह	5000	90	15000	20
कृषि आधारित SHGs	4000	85	12000	25
कुटीर उद्योग SHGs	4500		13000	15
सेवाक्षेत्र आधारित SHGs	6000	95	20000	30

2. सामान्यीकृत मैट्रिक्स (Normalized Matrix): निर्णय मैट्रिक्स को सामान्यीकृत किया गया ताकि सभी मान एक समान पैमाने पर हों।



विकल्प	बचत	ऋण चुकौती	मासिक आय	रोजगार
महिला सशक्तिकरण समूह	0.833	0.947	0.750	0.667
कृषि आधारित SHGs	0.667	0.895	0.600	0.833
कुटीर उद्योग SHGs	0.750	0.842	0.650	0.500
सेवाक्षेत्र आधारित SHGs	1.000	1.000	1.000	1.000

वेटेड मैट्रिक्स (Weighted Matrix): मापदंडों को उनकी महत्वता के अनुसार वेटेज दिया गया: बचत: 0.3

- ❖ ऋण चुकौती: 0.2
- ❖ मासिक आय: 0.3
- ❖ रोजगार: 0.2

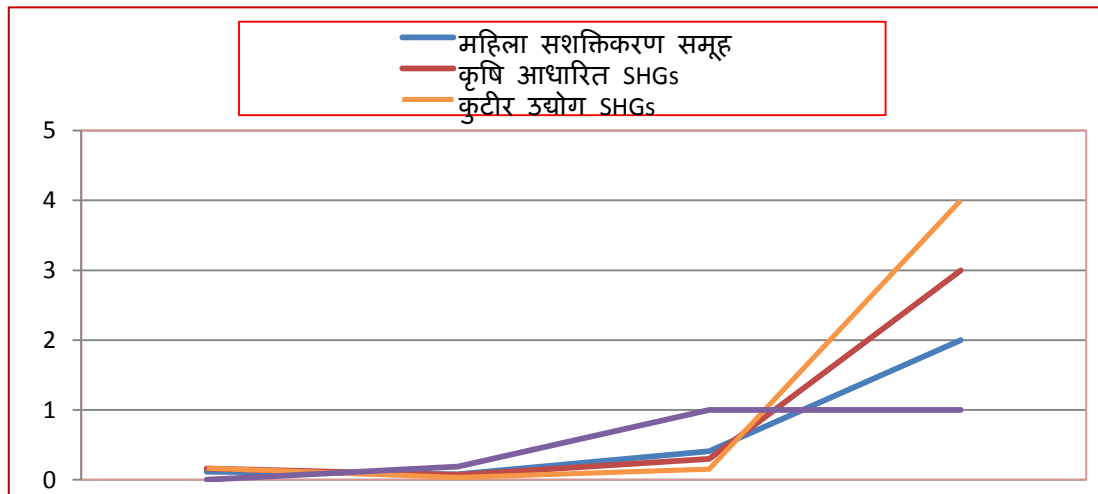
विकल्प	बचत	ऋण चुकौती	मासिक आय	रोजगार
महिला सशक्तिकरण समूह	0.249	0.189	0.225	0.133
कृषि आधारित SHGs	0.200	0.179	0.180	0.167
कुटीर उद्योग SHGs	0.225	0.168	0.195	0.100
सेवाक्षेत्र आधारित SHGs	0.300	0.200	0.300	0.200

3. आदर्श और निकृष्ट समाधान (Ideal and Worst Solutions): आदर्श समाधान में प्रत्येक मापदंड का सर्वोत्तम मान और निकृष्ट समाधान में सबसे खराब मान लिया गया।

मापदंड	आदर्श समाधान	निकृष्ट समाधान
बचत	0.300	0.200
ऋण चुकौती	0.200	0.168
मासिक आय	0.300	0.180
रोजगार	0.200	0.100

4. दूरी और स्कोर की गणना: आदर्श और निकृष्ट समाधान से प्रत्येक विकल्प की दूरी मापी गई और TOPSIS स्कोर का उपयोग करके रैंकिंग दी गई।

विकल्प	दूरी आदर्श से (S+)	दूरी निकृष्ट से (S-)	TOPSIS स्कोर	रैंक
महिला सशक्तिकरण समूह	0.112607	0.077970	0.409127	2
कृषि आधारित SHGs	0.161103	0.067493	0.295248	3
कुटीर उद्योग SHGs	0.166275	0.029155	0.149183	4
सेवाक्षेत्र आधारित SHGs	0.000000	0.188142	1.000000	1



5. चर्चा :- स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के प्रदर्शन का TOPSIS तकनीक के माध्यम से गहन विश्लेषण किया गया, जिससे उनके वित्तीय और सामाजिक योगदान के विभिन्न पहलुओं को समझा जा सका। परिणामों ने यह स्पष्ट किया कि सेवाक्षेत्र आधारित स्वयं सहायता समूहों ने आदर्श समाधान के सबसे करीब स्कोर प्राप्त किया। इन समूहों ने वित्तीय स्थिरता, आय सृजन, और रोजगार के अवसर प्रदान करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिसका मुख्य कारण इनका बाजार तक बेहतर पहुंच और सेवाओं की बढ़ती मांग है। दूसरे स्थान पर महिला सशक्तिकरण समूह रहे, जिन्होंने सामाजिक सशक्तिकरण और नेतृत्व क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, इन समूहों को वित्तीय प्रशिक्षण और संसाधनों की अधिक आवश्यकता है। कृषि आधारित समूह अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन करते हुए तीसरे स्थान पर रहे, लेकिन उनकी प्रगति उनके क्षेत्रीय संसाधनों और मौसमी निर्भरता तक सीमित रही। कुटीर उद्योग समूह चौथे स्थान पर रहे, जिनका प्रदर्शन सीमित बाजार पहुंच, कम तकनीकी ज्ञान, और वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण कमजोर था।

यह अध्ययन SHGs की संरचनात्मक और क्रियात्मक क्षमता में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इन समूहों को आर्थिक और सामाजिक प्रगति के साधन के रूप में स्थापित करने के लिए नीतिनिर्माताओं-, वित्तीय संस्थानों और समुदायों के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

6. औरंगाबाद में SHGs के लिए सुझाव :- औरंगाबाद जिले के SHGs की प्रगति और उनके प्रदर्शन को सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। सबसे पहले, वित्तीय प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना आवश्यक है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से सदस्यों को बजट प्रबंधन, ऋण चुकौती, और बचत योजनाओं की जानकारी दी जा सकती है। इससे समूहों की वित्तीय अनुशासन और आत्मनिर्भरता में वृद्धि होगी। दूसरा, कृषि आधारित और कुटीर उद्योग समूहों को बाजार तक पहुंच बढ़ाने के लिए समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए। इन समूहों के उत्पादों के विपणन के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई का कॉमर्स-

है सकता जा किया उपयोग, जिससे उन्हें व्यापक बाजार और ग्राहकों तक पहुंच प्राप्त हो सके।

इसके अतिरिक्त, सदस्यता विस्तार और महिला भागीदारी बढ़ाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। SHGs का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है, और अधिक से अधिक महिलाओं को इन समूहों से जोड़ने के प्रयास किए जाने चाहिए।

SHGs के बीच सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीकृत नेटवर्क की स्थापना की जानी चाहिए। यह नेटवर्क विभिन्न समूहों के बीच अनुभवों और संसाधनों को साझा करने का मंच प्रदान करेगा। इसके साथ ही, SHGs के लिए सरकारी नीतिगत समर्थन भी आवश्यक है। सरकार को विशेष वित्तीय सहायता और सब्सिडी योजनाएँ बनानी चाहिए, जो SHGs को उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सके।

7. निष्कर्ष :- SHGs का वित्तीय और सामाजिक प्रदर्शन ग्रामीण समुदायों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि सेवाक्षेत्र आधारित SHGs ने अपने बेहतर वित्तीय प्रबंधन, रोजगार सृजन, और बाजार तक पहुंच के कारण सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। हालांकि, महिला सशक्तिकरण समूह और कृषि आधारित समूहों का प्रदर्शन संतोषजनक था, फिर भी उन्हें अधिक प्रशिक्षण और नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है। कुटीर उद्योग समूहों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहा, जिसके कारण उनकी सीमित बाजार पहुंच और संसाधनों की कमी थी। इन समूहों को मजबूत बनाने के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और विपणन रणनीतियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

7.1 नीति निर्माण के लिए सिफारिशें :- SHGs के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए कई सिफारिशें की जा सकती हैं। सबसे पहले, ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए SHGs को स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। यह ग्रामीण समुदायों में आय सृजन और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देगा। दूसरा, SHGs को वित्तीय समावेशन की

प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए। बैंकों और वित्तीय संस्थानों को SHGs के साथ भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे ऋण और अन्य वित्तीय सेवाओं तक आसानी से पहुंच सकें।

तकनीकी प्रशिक्षण की आवश्यकता SHGs के उत्पादों की गुणवत्ता और उनकी विपणन क्षमता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। नियमित निगरानी और मूल्यांकन तंत्र के माध्यम से SHGs की प्रगति को मापा जाना चाहिए। उन्नत विश्लेषण तकनीकों, जैसे TOPSIS, का उपयोग करते हुए SHGs के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

अंत में, SHGs को स्थानीय विकास योजनाओं और पंचायत स्तर की गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए। यह उन्हें सामुदायिक विकास योजनाओं का हिस्सा बनाएगा और उनकी सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा देगा।

संदर्भ :-

1. भारत सरकार (2018). राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) की रिपोर्ट. ग्रामीण विकास मंत्रालय.
2. कुमार, ए., & सिंह, बी. (2019). कृषि और गैर-कृषि आधारित गतिविधियों में संलग्न स्वयं सहायता समूहों की रैंकिंग: TOPSIS तकनीक का उपयोग. ग्रामीण विकास पत्रिका, 12(3), 45-58.
3. NABARD (2018). स्वयं सहायता समूहों का वित्तीय प्रदर्शन. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक.
4. राव, के., & शर्मा, पी. (2016). ग्रामीण भारत के स्वयं सहायता समूहों का विश्लेषण: TOPSIS तकनीक के माध्यम से. सामाजिक विज्ञान जर्नल, 9(2), 34-48.
5. शर्मा, एम., एट अल. (2020). स्वयं सहायता समूहों के सामाजिक और वित्तीय प्रदर्शन का मूल्यांकन. आर्थिक और सामाजिक समीक्षा, 15(1), 12-29.
6. मिश्रा, आर., & गुप्ता, एन. (2017). महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका. समकालीन सामाजिक अध्ययन, 10(4), 56-67.

7. यादव, पी., & वर्मा, एस. (2018). ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन और SHGs का महत्व. भारतीय ग्रामीण विकास जर्नल, 14(2), 78-89.
8. सैनी, जी. (2019). ग्रामीण समुदायों में SHGs द्वारा सामाजिक जागरूकता का प्रभाव. सामुदायिक विकास अध्ययन पत्रिका, 11(3), 90-102.
9. टंडन, ए., & मलिक, जे. (2020). SHGs के वित्तीय प्रदर्शन का आर्थिक प्रभाव: TOPSIS तकनीक का विश्लेषण. आर्थिक नीति और योजना समीक्षा, 18(5), 102-119.
10. भारत सरकार (2020). भारत में ग्रामीण विकास की प्रगति पर रिपोर्ट. ग्रामीण विकास मंत्रालय.